हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर तृतीय सत्रार्द्ध
पत्र संख्या - 10

'दिनकर' द्वारा कामायनी की समीक्षा

रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'पंत, प्रसाद, और मैथिलीशरण' में एक लेख लिखा - 'कामायनी': दोषरहित एवं सहित। इस लेख में उन्होंने 'कामायनी' के काव्य-सौन्दर्य की प्रशंसा भी की और कई तत्वों की कठोर आलोचना भी की।

दिनकर ने कुछ आधारों पर 'कामायनी' में श्रेष्ठ रूप है जो इस प्रकार है -

1.) जयशंकर प्रसाद का कवित्व 'कामायनी' में श्रेष्ठ रूप में व्यक्त हुआ है जो यूँ तो सभी सर्गों में है, किन्तु श्रद्धा, काम तथा लज्जा सर्गों में सर्वोच्च स्तर पर है।

2.) श्रद्धा के सौन्दर्य का वर्णन अत्यन्त उत्कृष्ट है जो परंपरा में अनुपलब्ध है। इस सौन्दर्य वर्णन में आंतरिक एवं बाह्य गुणों का समन्वय अत्यंत सूक्ष्मता से किया गया है। उदाहरण के लिए 'हृदय की अनुकृति बाह्य उदार, एक लम्बी काया उन्मुक्त"।

3.) कामायनी का महत्व बिम्बों दृष्टि से भी काफी अधिक है। कवि ने अपने अनुभव के सूक्ष्म जटिल व अमूर्त रूपों को बिम्बों की शैली

में अंकित किया है। बिम्बों का सौन्दर्य यूँ तो पूरे छायावाद में दिखता है किन्तु कामायनी इस दृष्टि से ज्यादा सफल है।

4.) कामायनी में मध्यकाल की निवृत्तिमूलक विचार धारा का निषेध हुआ है तथा आधुनिक युग के अनुकूल प्रवृत्तिवादी विचारधारा की स्थापना की गई है। इस दृष्टि से कामायनी एक विशिष्ट रचना है क्योंकि यह प्रेम को मुक्ति की तरह उदात्त व निवृत्तिमूलक नहीं बनाती बल्कि काम चेतना की सहज रूप से स्वीकार करती है,

"काम मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम"

कामायनी की कठोर आलोचनाएँ भी की है जो इस प्रकार से है—

1.) प्रसाद का नारी के प्रति दृष्टिकोण मध्ययुगीन तथा रोमांसवादी है वे नारी को उसी काल्पनिक रूप में प्रस्तुत करते है जिसमें उसे दया, ममता, त्याग व समर्पण जैसे गुणों का व्यक्त रूप माना जाता है।

2.) प्रसाद ने कामायनी को लौकिक जीवन से जोड़ने की बजाय परलोक से जोड़ दिया है इसका परिणाम यह हुआ है कि कामायनी का केन्द्रीय उद्देश्य आधुनिक युग की विचारधारा

के अनुकूल नहीं हो सका। संसार को छोड़कर मुक्ति के लिए वन में जा बैठने की परम्परा उपनिषदों से शुरू हुई तथा बौद्ध व जैन मतों ने इसका चरम विकास किया। बेहतर होता है कि मनु व श्रद्धा अंत में लौकिक जीवन ही जीते, उससे पलायन न करते।

3.) प्रसाद में इच्छा व ज्ञान के लिए पक्षपात दिखाई पड़ता है और वे कर्म को इन दोनों की तुलना में हेय मानते हैं। श्रद्धा रचना के आरंभ में मनु को बार-बार कर्म का उपदेश देती है किन्तु रहस्यमय सर्ग में वह स्वयं कर्म की आलोचना करती है।

4.) कर्म को हेय मानने का ही परिणाम था कि अंत मनु व श्रद्धा ~~का~~ कर्मों को विदा कह कर कैलाश पर्वत पर चले गए।

निष्कर्ष: दिनकर की ~~की~~ कई आलोचनाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं इसी दृष्टिकोण का विकास प्रगतिवादी समीक्षा में लगातार दिखाई पड़ता है किन्तु कुछ आक्षेप ऐसे हैं जो संभवतः प्रसाद का दृष्टिकोण नहीं समझने के कारण किए गए हैं, उदाहरण के लिए श्रद्धा कर्म को हेय नहीं समझती है।

रहस्य सर्ग में वह उस कर्म की आलोचना करती है जो भावनाओं से संगत नहीं होता है अर्थात् विषमता की स्थिति का परिणाम होता है। प्रसाद कर्म का समर्थन करते हैं इसीलिए आनंद सर्ग में भी मनु व श्रद्धा को सामाजिक कर्म को करते हुए दिखाया गया है।

कुल मिलाकर दिनकर की समीक्षा कुछ प्रगतिवादी मानदंडों पर आधारित होने के कारण एकांगी सी हो गई है। ~~कामायनी~~ यथार्थवाद, समाजवाद व आधुनिकतावाद का प्रस्तुतीकरण रचना की महानता के लिए आवश्यक नहीं माना जा सकता।

प्रस्तुतकर्ता

दिनांक
06/01/2021

पैगाम कुमार (सहायक प्राध्यापक)
(अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
मो० नं० – 8292227104।